अध्याय - दू

गुलाल साहेब

गुलाल साहेब के जनम उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिला के भरकुड़ा गाँव के एगो संपन्न खत्री परिवार में भइल रहे। इहाँ के जीवनकाल के बारे में विद्वानन का बीचे मतैक्य नइखे। तबहूँ एगो समय जेकरे सभे मानल ऊ सन् 1693 ई० से सन् 1743 ई० (सं०-1750 से 1800) बा। अपना सेवक बुल्लेशाह में ईश्वरीय सत्ता के प्रत्यक्ष प्रमाण देखे के उनका के आपन गुरु मान लिहले।

गुलाल साहेब, यारी साहब के शिष्य परंपरा के विशिष्ट संत रहले। इनका रचनन में एक ओर जहाँ अनहद नाद, विनय, भेदाभेद, आ माया-ब्रह्म के व्याख्या कइल गइल बा त दोसरा ओर भगवत् प्रेम के सुंदर आ मनोहारी चित्र उरेहल गइल बा। साँच पूछीं त प्रेम रस त अद्भुत होला। एह रस के तुलना ना कइल जा सके। जब आदमी प्रेम रस में डूब जाला त ओकरा खातिर सबकुछ तुच्छ हो जाला। आ एकर रस जब आदमी के मिल जाला तब ओकरा अउर कुछ अच्छा ना लागे। आ ई तबे संभव हो पावेला जब गुरु के किरिपा होला।

गुलाल साहेब अपना पदन के माध्यम से जीवन, ब्रह्म आ माया के भेद बतावत अंतर्मुखी साधना पर जोर देले बाड़न आ सामाजिक आडंबर पर करारा प्रहार कइले बाड़न।

विषय प्रवेश

संग्रह में संकलित पद ब्रह्म के व्याख्या करत लोगन के समझवले बानीं कि 'राम' त हर आदमी के भीतर बाड़ें। उनका के कहीं खोजे के जरूरत नइखे। पद के माध्यम से गुलाल साहेब पाखंडी लोगन के उपर व्यंग्य करत कहत बाड़न कि पाथर पूजला आ तरह-तरह के भेष बनाके घुमला से राम ना मिलिहें। आदमी असहीं मिरिगा अइसन मिरिगजल के पीछे धउरत फिरी, एह से अच्छा बा कि आदमी अपना भीतरे के राम के पहचानो ना त जमपुर जाहीं के बा।

1. पद

तन में राम और कित जाय ।
घर बैठल भेंटल रघुराय ।।1।।

जोगि जती बहु भेख बनावें ।
आपन मनुवाँ नहिं समुझावे ।।2।।

पूजहिं पत्थल जल को ध्यान ।
खोजत घूरहिं कहत पिसान ।।3।।

आसा तृस्ना करें न थोर ।
सुविधा मालत फिरत सरीर ।।4।।

लोक पुजावहिं घर-घर धाय ।
दोजख कारन भिस्त गँवाय ।।5।।

सुन नर नाग मनुष औतार ।
बिनु हरि भजन न पावहिं पार ।।6।।

कारन धै धै रहत भुलाय ।
तातें फिर फिर नकर समाय ।।7।।

अबकी बेर जो जानहु भाई ।
अवधि बिते कछु हाथ न आई ।।8।।

सदा सुखद निज जानहु राम ।
कह गुलाल न तो जमपुर धाम ।।9।।

2. पद

मन तूँ हरि गुन काहे न गावै ।
तातें कोटिन जनम गँवावै ।।

घर में अमृत छोड़ि कै, फिरि फिरि मदिरा पावै ।
छोड़हु कुमति मूढ़ अब मानहु, बहुरि न ऐसो दावै ।।

पाँच पचीस नगर के बासी, तिनहिं लिये संग धावै ।
बिन पर उड़त रहै निसि बासर, ठौर ठिकान न आवै ।।

जोगी जती तपी निर्बानी, कपि ज्यों बाँधि नचावै ।
सन्यासी बैरागी मौनी, धै धै नरक मिलावै ।।

अबकी बार दास है मेरो, छोड़ों न राम दुहाई ।
जन गुलाल अवधूत फकीरा, राखो जंजीर भराई ।।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गुलाल साहेब के जनम कहाँ भइल रहे ?
2. कवि केकरा से हरिगुन गावे के कहत बाड़न ?
3. कवि केकरा के सदा सुखद मानत बाड़न ?
4. **कवि केकर ध्यान करे के कहत बाड़न -**
   (क) मंदिर में स्थापित मूरत के
   (ख) जवना साधु के खूब प्रशंसा मिलत होखे
   (ग) जेकर पूजा कहला से सांसारिक सुख मिले
   (घ) घर घर में निवास करेवाला ब्रह्म के
5. **ब्रह्म के कहाँ से प्राप्त कइल जाई -**
   (क) मंदिर में पूजा कइला से
   (ख) माला जाप कइला से
   (ग) घर बार छोड़के साधु बन गइला से
   (घ) अन्तर्मुखी होके ब्रह्म के ध्यान कइला से

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ब्रह्म प्राप्ति खातिर कवि का उपाय बतावत बाड़न ?
2. भेष बनाके संसार में प्रतिष्ठा पवला से मुक्ति ना मिले के का कारन बाड़न ?
3. जोगी जती लोग के बानर लेखा नाचे के का कारन बा ?

ABDIEL PUBLICATIONS ABSOL PATNA

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पठित पदन के आधार पर गुलाल साहेब के साधना पद्धति पर प्रकाश डालीं।
2. "गुलाल साहेब के रचना में निर्गुण ब्रह्म के व्याख्या कइल गइल बा।" सिद्ध करीं।

सप्रसंग व्याख्या

दूनो पद के

भाषा अध्ययन

1. नीचे लिखल शब्दन के तत्सम रूप लिखीं -

(क) जती
(ख) मनुवाँ
(ग) भेख
(घ) तपीं

परियोजना कार्य

1. रउआ गाँव जवार में कवनो संत महात्मा भइल होखस, त उन्हुकर जीवनी लिखीं।
2. अपना जिला के कवनो ऐतिहासिक स्थल के इतिहास आ वर्तमान पर प्रकाश डालीं।
3. कबीर दास के पद से पठित पदन के मिलान करीं।

1 मन तूं हरि गुन काहे न गावै।
2. तन में राम और कित जाय।

शब्द भंडार - 1

कोटिन	-	करोड़न (करोड़ो)
पाँच पचीस	-	देह के तत्व
निसि वासर	-	रात दिन
ठौर ठिकान	-	स्थाई जगह
कपि	-	बानर
दाव	-	पारीं

शब्द भंडार - 2

कित	-	कहाँ
भेंटल	-	भेंट भइल
भेख	-	सरूप
धूरहिं	-	धूल
पिसान	-	आँटा
मातल	-	मदमस्त
दोजख	-	नरक (भूख)
भिस्त	-	कीमती शरीर
धै धै	-	दउरत दउरत
जमपुर	-	नरक

पाठ से बाहर के चीज

नीचे दिहल पद्य पढ़ के सवालन के जवाब दीं।

"कँवल से भँवरा बिछुड़ल हो,
जहँ कोई न हमार ॥ 1 ॥
भौजल नदिया भयावन हो,
बिन जल कै धार ॥ 2 ॥
ना देखूं नाव न बेड़ा हो,
कइसे उतरब पार ॥ 3 ॥
सत्त के नैया सिर्जावल हो,
सुकिरत करि चार ॥ 4 ॥
गुरु के सबद के नहरिया हो,
खेई उतरब पार ॥ 5 ॥
दास कबीर निरगुन गावल हो,
संत करहुँ विचार ॥ 6 ॥

सवाल

1. ऊपर के लिखल निरगुन केकर ह ?
2. निरगुन के भाव अपना शब्द में लिखीं।
3. साथी के साथ मिल के गाईं।

शब्द भंडार

कँवल - नाभि कमल
भँवरा - जीव
सुकिरत - गुरु